International Journal of Sanskrit Research 2025; 11(2): 154-155

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(2): 154-155
© 2025 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-01-2025
Accepted: 20-02-2025

डॉ. नीरज कुमार
सहायक प्राचार्य साहित्य,
कल्याणी मिथिली संस्कृत महाविद्यालय, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. नीरज कुमार
सहायक प्राचार्य साहित्य,
कल्याणी मिथिली संस्कृत महाविद्यालय, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

साहित्य में वर्णित श्रीकृष्ण चरित की प्रासंगिकता

नीरज कुमार

DOI: https://www.doi.org/10.22271/23947519.2025.v11.i2c.2605

सारांश
श्री कृष्ण का जन्म द्वापरयुग में हुआ था, उनको इस युग के सर्वश्रेष्ठ पुरूष, युगपुरूष या युगावतार का स्थान दिया गया है, श्री कृष्ण के समकालीन महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित श्रीमभ्दागवत गीता और महाभारत में कृष्ण का चरित्र विस्तृत रूप से लिखा गया है। श्रीमभ्दागवत गीता में श्री कृष्ण और अर्जून का संवाद है जो ग्रंथ आज भी पूरे विश्व में लोकप्रिय है। इस उपदेश के लिए श्री कृष्ण को जगत गुरू का सम्मान भी दिया गया है।

कूटशब्दः श्रीकृष्ण, द्वापरयुग, महाभारत, भगवद्गीता, अर्जुन, जगतगुरु

प्रस्तावना

भारतीय वाङ्मय तथा साहित्य में श्री कृष्ण का मनमोहक कलारूप तथा लोकरक्षक रूप सर्वाधिक चर्चित और महत्वपूर्ण है। कृष्ण के व्यक्तित्व में निहित लालित्य, माधुर्य और अपराजित व्यक्तित्व का कलारूप जितना विकासशील, प्रभावकारी और मादक रहा है। उतना पूरे भारतीय धर्म साधना में किसी का नही रहा है। यही कारण है कि उनके रूप और व्यक्तित्व में निरन्तर विस्मयजनक परिवर्तन होते है। विष्णु से सभी अवतारो के बीच श्री कृष्ण अपनी मनोरम छवि तथा उद्धारक व्यक्तित्व के कारण सर्वाधिक लोकप्रियता और ख्याति पा सके। श्रीराम का व्यक्तित्व जहाँ बारह कलाओं में समन्वित था, वही श्री कृष्ण का व्यक्तित्व सोलह कलाओ में।

कृष्ण काव्य के प्रेरणस्त्रोत संस्कृत साहित्य में मिलते है। वैदिक साहित्य में कृष्ण काव्य का प्रचीनतम् उल्लेख ऋग्वेद् में मितला है। ऋग्वेद में ''कृष्ण जगिरस'' नाम के ऋषि है। (ऋग्वेद अष्टम् मण्डल) छान्दोग्य उपनिष्द् (3–17, 4–6) में देवकीपुत्र कृष्ण का उल्लेख मिलता है, कृष्ण का मानव रूप और 'भारत' से कृष्ण की महिमा का उल्लेख महाभारत के शान्तिपर्व, उद्योगपर्व में उन्हे, ब्रहम, ईश्वर, नारायण और श्री विष्णु आदि कहकर पूजा भाव की अभिव्यक्ति की गई है, (सभापर्व अध्याय) (4–1) में शिशुपाल में कृष्ण को 'गोप' कहा तथा उसके द्वारा मारे गये पूतना, बकासूर, केशी, कंश आदि के उल्ल्ख के साथ गोवर्धन धारण की घटना का संकेत भी किया है। महाभारत में गोपाल या श्रीकृष्ण लीलाओ का वर्णन नही मिलता है। कृष्ण लीला का विकास बाद में चलकर पूराणो में मिलता है। महाभार में द्वारिकावासी श्रीकृष्ण का वर्णन है। वहाँ उन्हे कुशल राजनीतिज्ञ, ज्ञानी, उपदेशक, योद्धा और लोकसंग्रही जननायक के रूप में चित्रित किया गया है। इस तरह वैदिक काल से महाभारत काल तक सात्वत् धर्म के वासुदेव, नारायणी धर्म के नारायण और वैष्णव धर्म के विष्ण का श्री कृष्ण के साथ एकीकरण मिलता है। वैष्णव पुराणों में श्रीकृष्ण भक्ति का जन – जीवन के धरातल पर प्रदुर्भाव हुआ किशेर जीवन की अनेक रसमयी लीलाओ के कारण वे जन मन के आकर्षण के केन्द्र बने। अनेक उत्पीड़क शक्तियों का विनाश कर लोक–रक्षा करने के क्रम में उनका लोक रक्षक–रूप भी मिलता है। पुराणों की इसी मूल प्रेरणा का आधार पाकर (सूर–सागर) परमानन्द दास (परमानन्द सागर) आदि भक्तिकालीन कवियो ने श्री कृष्ण के माधुर्य रूप के साथ उनके असुर विनाशक, लोक संग्रही रूप को चित्रित किया है, जिसका वर्णन मिलता है।

पुराणे में जन्म जन्मांतर तक चलनेवाला गोपियो और उसके प्रेम की चर्चा मिलती है। राधा का सर्वप्रथम् उल्लेख पहली शताब्दी में प्राकृत के कवि हाल की ''गाथा सप्रशती'' में मिलती है। राधा के व्यक्तित्व का विशद निरूपण ब्रहमवैवर्त पुराण, पद्म पुराण, देवी भगवत् पुराण राधा तंत्र, राधिकोपनिषद आदि में मिलता है। इसमे राधा–भाव या गोपी भाव ही प्रमुख है। प्रायः श्री कृष्ण भक्त कवियो ने राधा को कृष्ण की विवाहिता पत्नी या प्रेमयी के अन्यतम अभिन्न स्वरूप में ही चित्रित किया है। श्री कृष्ण निष्काम कर्मयोगी, आदर्श दाशर्निक, स्थितप्रज्ञ एवं देवी संपदाओ से सुसज्जित महान पुरूष थे।

संस्कृत प्राकृत की मुक्तफ काव्य परम्परा में राध–कृष्ण की प्रेमलीला का चित्रण हाल की गाथा सतसई मुक्तफ काव्य में मिलता है। ग्यारहवी श्ताब्दी में कवि लीलाशुक द्वारा चरित्र कृष्ण कर्णामृत, कृष्णलीलाकृत मुक्तफ काव्य में श्री कृष्ण संबंधी मधुर भाव चित्र, संगीत प्रेम लीलाओ का मादक चित्रण मिलता है। कवियो ने अपने समय में निरन्तर राधाकृष्ण को माध्यम बनाकर मनुष्य, समाज और देशहित के लिए मुक्ति प्रेम कर्म और शान्ति का संदेश दिया हैं। लोक संस्कृति की चेतना का यह साहित्यक रूप और भारतीय संस्कृति का श्रृंगार निश्चय ही काव्य में निहित और औपचारिकताओ विधि विधानो, ज्ञान भक्ति कंठाओ, वर्जनाओ, मिथ्या मर्यादाओ नैतिकताओ, दबावो, तनावो से मुक्त करके मनुष्य के भीतर आशा, उत्साह आस्था उल्लास आन्नद, करूणा और समपर्ण का संचार करता हैं। मुक्तफ पदो, शस्त्रीय रागो, कीर्तन–भजन गीत–संगीत और लोक–जीवन से जुड़े लोकधुन आदि आज भी भारतीय समाज का जीवंत बनाये हुए है। भक्त और भगवान में कोई दुरी नही है न ही कालात्मक रूप–सौन्दर्य और कला के बीच कोई दुरी हैं। राधा और गोपितयाँ कृष्ण के विरह में जलती है, तो कृष्ण भी उनके विरह में वेचैन और उद्विग्न दिखते है।

इस तरह भारतीय वाङ्गमय और साहित्य मे वर्णित श्री कृष्ण का अपराजित स्वरूप विपुल शक्ति और अपूर्व सौन्दर्य धारक तथा लोकरंजक लोकधर्मी आकर्षक चरित्र, लोक और समाज के लिए बेहद उपयोगी और प्रासंगिक है। वर्त्तमान विज्ञान तंत्र, सूचना संचार और इलेक्ट्रोंनिक, तकनिकी माध्यमो के समय में आज जिस तरह कॉरपोरेट जगत हमारे जीवन को विकृत कर रहा है, उसमें श्री कृष्ण के रक्षक व्यक्तित्व और चरित्र की प्रांसागिकता बनी हुई है। हम सब को कृष्ण की तरह बनना होगा। चण्डाल और मीरा की तरह श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व को धारण करना होगा तभी हम कंश जैसे समाज के अत्याचारी ढोगी ठेकेदारों पूँजीपत्तियो और पद के मद में डूबे राजनितीक ठेकेदारों, नौकरशाहो को नियंत्रित किया सकता है। बाजार वाद, भोगवाद, उपभोक्तावाद तथा जूगाड़ी और जूगाड़ी संस्कृत तथा भ्रष्टाचार से त्राण मिल सकता है।

श्रीकृष्ण के चरित्र की प्रतिष्ठा में सर्वाधिक योगदान श्रीमभ्दागवत् पुराण का रहा है। श्रीकृष्ण भक्ति का सबसे बड़ा स्त्रोत यही ग्रंथ है। कृष्ण–भक्ति सम्बंधी सम्प्रदायो की दर्शनिक मान्यताओ का आधर भी यही श्रीमभ्दागवत् गीता ग्रंथ है। कृष्ण–भक्ति काव्य के उत्तरोत्तर विकास में कृष्ण चरित्र विकसित हुआ है। साहित्य में वर्णित कृष्ण का जीवन, धार्मिक और पूर्ण जीवन–जीने के लिए एक व्यापक मार्गदर्शन प्रदान करता है।

निष्कर्षत

गीता में निहित मूल्य सम्पूर्ण आत्मा को शक्ति परम्शक्ति तथा अनन्दानुभूति प्रदान करते है, साथ ही विश्वात्मा ईश्वर की सन्तान आदि ज्ञान द्वारा विश्व बन्धुत्व, विश्व कल्याण की भावना एवं तदनकूल व्यवहार हेतू प्रेरित करते है। लौकिक जीवन में गीता भौतिक, समाजिक अध्यात्मिक मूल्यो की स्थापना के साथ ही विश्व के समस्त मानव समाज को नव चेतना देकर आत्यान्तिक शक्ति प्रदान करती है। अतः गीता को जीवन का आधार बनाना चाहिए उसका भलि भांति सदुपयोग करना चाहिएः–

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख्यपदमाद्विनिस्मृता ।।

इस पथ पर अनुकरण करने वाला अपने लिए तो ज्ञान का द्वार खोल ही लेगा अपितु उसके तप पूत व्यक्तित्व के प्रकाश से मानव–समाज भी अभ्युदय के पथ पर अग्रसर हो सकेगा और आत्मसात करने से ईश्वर के बोध की प्राप्ति होती है। और अपना–अपना कल्याण के पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थावलि

1. श्रीमद्भगवत गीता – गीता प्रेस गोरखपुर।
2. ऋग्वेद अष्टम मंडल (3–17)।
3. छान्दोग्य उपनिषद (4–6)।
4. महाभारत शन्ति पर्व, उद्योगपर्व।
5. महाभारत समा पर्व अध्याय (4–1)।
6. सूर सागर।
7. ब्रह्म वैर्वेत पुराण।
8. प्रद्म पुराण।
9. देवि भागवत पुराण।
10. राधिकोपनिषद।
11. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–
12. पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी आर्चाय।